[redacted] शास्त्री - 1st

आवश्यकताओं का वर्गीकरण (Classification of Wants)

[redacted] For Final Exam-2020

17/07/20 साधारणतया मानवीय आवश्यकताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है :- (A) अनिवार्य आवश्यकताएं :- अनिवार्य आवश्यकताएं वे हैं जिनकी पूर्ति जीवन रक्षा, कार्यक्षमता तथा सामाजिक रीति-रिवाज की दृष्टि से अनिवार्य एवं आवश्यक होती हैं। अनिवार्य आवश्यकताएं भी मुख्यतया तीन प्रकार की होती हैं :- (I) जीवन रक्षक अनिवार्य आवश्यकताएं :- प्रायः इस श्रेणी में ऐसी आवश्यकताएं आती हैं, जिनकी संतुष्टि के बिना हम नहीं रह सकते हैं जैसे - भोजन, वस्त्र, आवास। (II) निपुणतारक्षक आवश्यकताएं :- ऐसी आवश्यकताओं जो मनुष्य की कार्यक्षमता में तत्काल वृद्धि करे उसे हम ~~जीवन रक्षक~~ निपुणतारक्षक अनिवार्य आवश्यकता कहते हैं जैसे - फल, दूध, पानी, पौष्टिक खाद्य इत्यादि। (III) प्रतिष्ठारक्षक अनि॰ आवश्यकता :- अक्सर इस श्रेणी में वे आवश्यकताएं आती हैं, जिनकी पूर्ति सामाजिक रीति-रिवाज तथा परम्परा पालन के लिए आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए हिन्दू परिवारों में शादी-ब्याह एवं श्राद्ध कर्म में स्वयं अतिथि के सत्कार इत्यादि अवसरों पर आवश्यक होती हैं। (B) आरामदायक आवश्यकताएं (Comforts) :- इस तरह की आवश्यकताएं जिनका उपभोग करने से मनुष्य को तत्काल सुख की प्राप्ति होती है उसे हम आरामदायक आवश्यकता कहते हैं जैसे - गर्मी में बिजली पंखा का प्रयोग, जाड़े में हीटर आदि का प्रयोग आदि। (C) विलासिता संबंधी आवश्यकता (Luxurious) :- इस तरह की आवश्यकताएं जिनका उपयोग करने से मनुष्य को अत्यधिक सुख का अनुभव होता है उसे हम विलासिता संबंधी आवश्यकता कहते हैं जैसे - स्वादिष्ट व्यंजन का प्रयोग, गर्मी में कूलर का प्रयोग इत्यादि। विलासिता संबंधी आवश्यकता भी दो तरह की होती हैं - (i) अहानिकारक विलासिता (Harmless luxuries) :- इन आवश्यकताओं के अन्तर्गत कीमती वस्त्र, शानदार मकान, बहुमूल्य आभूषण, कीमती गाड़ी आदि वस्तुएं सम्मिलित की जाती हैं। इन वस्तुओं के उपभोग से न तो हमारी कार्यक्षमता में कोई वृद्धि होती है, न ही कार्यक्षमता में कोई कमी आती है। (ii) हानिकारक विलासिता (Harmful luxuries) :- इस तरह की विलासिता वस्तुएं जिसका सेवन करने से मनुष्य की कार्यक्षमता पर बुरा असर पड़ता है उस तरह की आवश्यकता को हम हानिकारक विलासिता कहते हैं जैसे - शराब या अन्य मादक वस्तुओं का सेवन करने से होता है।

[redacted] प्रो॰ - ब्रजेश पाठक [redacted]
(अर्थ॰ विभाग)
R.K.S. College Sukhbena, Purnea. [redacted]
17/12/20

उद्योगपति एवं व्यापारी वर्ग दोनों को लाभ होता है, उद्योगपति एवं व्यवसायी वर्ग की वस्तुएँ आसानी से अधिक लाभ देकर बाजार में बिकती हैं, वास्तव में मुद्रास्फीति काल में सबसे ज्यादा लाभ व्यापारी वर्ग ही लेता है।

(6) विनियोगी वर्ग (Investor class) :— विनियोगी वर्ग से हमारा अभिप्राय उन लोगों से होता है, जो उद्योग और व्यवसाय में पैसा लगाते हैं और इस प्रकार लगाये हुए रुपये से आय प्राप्त करते हैं, मुद्रास्फीति काल में निश्चित आयवाले विनियोगी को हानि होती है क्योंकि उनकी आय तो स्थिर रहती है, और मुद्रा की क्रयशक्ति घट जाती है, दूसरी तरफ परिवर्तनशील आय वाले विनियोगी वर्ग को अधिक लाभ होता है। मुद्रास्फीति का काल व्यवसायों के लिए सम्पन्नता का काल होता है। फलतः लाभ का अंश अधिक रहता है और इसलिए इस वर्ग के विनियोगियों को अधिक आयों की प्राप्ति होती है। (7) स्फीति काल में ऋणदाता वर्ग को हानि होती है, तथा ऋणी को लाभ होता है क्योंकि ऋणदाता वर्ग को ऋण की वापसी प्राप्त होने पर उसकी क्रयशक्ति कम हो जाती है। ऋणी जब मूलधन को स्फीति काल में लौटा देता है, तो उसे लाभ होता है।

उपर्युक्त प्रभावों के अतिरिक्त, मुद्रास्फीति देश के सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालती है। स्फीति काल में आर्थिक विषमता में वृद्धि, राजनैतिक अशांति, करों में वृद्धि, वस्तु क्रीड़ा एवं नैतिकता पर बुरा प्रभाव डालती है। प्रायः मुद्रास्फीति काल में नये-नये उद्योग तथा व्यवसाय स्थापित होने से एक महत्वपूर्ण लाभप्रद होता है कि बेरोजगारी की मात्रा में बहुत कमी आती है। मुद्रास्फीति काल में आर्थिक विकास की दर अधिक होती है, कारण अविकसित देशों में मुद्रा प्रसार के फलस्वरूप आर्थिक विकास अवश्य बढ़ता है किन्तु स्फीति जनित विकास में छिपी आर्थिक बर्बादी तथा सामाजिक मूल्यों में ह्रास की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। वास्तव में आर्थिक विषमता में वृद्धि करने वाला यह विकास आर्थिक तथा सामाजिक न्याय के सर्वथा प्रतिकूल है। — x — x

R.W.S. College Sughseng Bhagat
Bihar. 17/12/20